Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी टेस्ट-7 (भूषण) आदर्श उत्तर कुंजी पूर्णांक 20

प्रश्न 1. पठित अंश के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भूषण वीररस के कवि थे।

उत्तरः कवि भूषण वीर रस के अद्वितीय कवि हैं उन्होंने शिवाजी महाराज तथा छत्रसाल बुंदेला की वीरता का बड़ी ही ओजस्वी वाणी में वर्णन किया है। रीतिकाल के श्रृगारिक वातावरण में भी उन्होंने वीर रस की सरिता बहायी है। महाराज शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना सजाकर उत्साह में भरे शत्रुओं पर विजय पाने जा रहे हैं। स्पष्ट है कि उत्साह वीर रस का स्थायी भाव है और शिवाजी उस समय वीर रस में ओतप्रोत हैं। नगाड़ों की ध्वनि 'उद्दीपन' बनकर उनके उत्साह को बढ़ा रही है। छंद पाठकों के मन में भी वीर रस का संचार कर रहा है। कवि शिवाजी की वीरता का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि शिवाजी जब मुगल दरबार में उपस्थित हुए और उनका अपमान किया गया तो उन्होंने निडर होकर उस अपमान के लिए आवाज उठाई और शिवाजी का रूद्र रूप देखकर सभी दरबारियों के चेहरे पीले पड़ गए इसी प्रकार शिवाजी के पराक्रम और शौर्य का वर्णन करते हुए कवि ने उनकी तुलना ईश्वर के कार्यों से की है अजी की वीरता का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि "तेज तम अंश पर कान्हा जिमी कंस पर त्यों मल्लेश बंश पर सेर सिवराज है। अत: संकलित छंदों से स्वत: सिद्ध हो रहा है कि भूषण वीर रस के कवि थे।

प्रश्न 2. भूषण का साहित्यिक परिचय दीजिए

उत्तरः रीतिकाल की श्रृंगार प्रधान काव्य-सरिता में वीररस की प्रबल धार बहाने वाले कवि भूषण का जन्म सन् 1613 ई. में उत्तरप्रदेश में कानपुर के तिकवाँपुर गाँव में हुआ था उनके पिता रत्नाकर त्रिपाठी थे। इनका मूल नाम घनश्याम था तथा भूषण इनकी उपाधि है। इन्हें छत्रपति शिवाजी तथा छत्रसाल महाराज के दरबार में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। कवि भूषण की रचनाओं में शिवराजभूषण , छत्रसालदशक, शिवाबावनी. भूषण हजारा व भूषण उल्लास आदि का उल्लेख किया जाता है। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना शिवराजभूषण है। भूषण की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना, वीरता के उद्गार व ओज गुण का वैशिष्ट्य है। कवि की वाणी देशवासियों के लिए आज भी प्रेरणादायी है। इनकी मृत्यु - सन् 1715 ई.में हुई।

प्रश्न 3. भूषण के छंदों का मुख्य विषय क्या है ? संकलित छंदों के आधार पर लिखिए।

उत्तर: संकलित छंदों के आधार पर देखें तो भूषण के छंदों का मुख्य विषय शिवाजी महाराज की वीरता ,

निर्भीकता और शत्रुओं पर उनके आतंक का वर्णन करना है।

प्रथम छंद में कवि भूषण ने शिवाजी की विजय यात्रा का वर्णन किया है। सेना की विशालता और उसके प्रस्थान से शत्रुओं में मची खलबली का कवि ने बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है।

दूसरे छंद में शिवाजी की निर्भीकता और स्वाभिमान के साथ शत्रुओं पर उनके क्रोध का प्रभाव दिखाया है। शिवाजी के भड़कने पर औरंगजेब का मुँह काला और सिपाहियों के मुँह भय से पीले पड़ जाते हैं।

तीसरे छंद में कवि ने शिवाजी को धरती का भार धारण करने वाला और ईश्वर के स्थान पर जगत् का भरण-पोषण करने वाला बताया है। कवि शिवाजी के जीवन को सफल बताता है।

चौथे और पाँचवे छंदों में कवि ने अत्याचारी शत्रु और शिवाजी के आतंक का आलंकारिक वर्णन किया है।

इस प्रकार संकलित छंदों का मुख्य विषय शिवाजी की प्रशंसा है। कवि ने उन्हें एक राष्ट्रीय वीर पुरुष , पराक्रमी योद्धा और आदर्श शासक दिखाया है।

प्रश्न 4. सप्रसंग व्याख्याएँ कीजिए (कोई दो)
4×2= 8

(1) साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि , सरजा सिवाजी जंग जीतने चलत है। भूषन भनत नाद बिहद नगारन के, नदीनद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफल खैलभैल खलक में गैल-गैल, गजन की तैलपैल सैल उसलत है।
तारा सौ तरनि धूरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित वीर रस के कवित नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है। इस छंद में कवि , शिवाजी की विशाल सेना के युद्ध के लिए जाते हुए समय का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- कवि भूषण शिवाजी की वीरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना को तैयार कर और अपने अंगों में अत्यधिक उमंग भरकर जब युद्ध को जीतने के लिए चलते हैं , तो उनकी बड़ी ही अनुपम शोभा होती है। युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय उनके नगाड़ों की आवाज चारों ओर गूंजने लगती है। हाथियों की मदधारा बहने से चारों तरफ नदी नाले बहने लगते हैं अर्थात कवि कहता है कि शिवाजी के पास हाथियों की एक विशाल सेना है और वह सब हाथी एक साथ चलते हैं तो उनकी कनपटियों | से निकलने वाला पसीने जैसा द्रव्य पदार्थ इतना अधिक होता है कि उनसे कई नदी नाले बहने लगते हैं। शिवाजी की सेना के हाथी , घोड़े, पैदल इत्यादि सब जब एक साथ चलते हैं तो सारे संसार की गली-गली में खलबली मच जाती है। उनकी सेना के हाथी जब एक दूसरे को ठेलते हुए अर्थात धक्का मुक्की करते हुए चलते हैं तो इससे बड़े-बड़े पर्वत भी उखड़ने लगते हैं। सेना के चलने से चारों तरफ बहुत अधिक धूल उड़ती है। धूल के उड़ने के कारण सूर्य छोटे से तारे के समान लगने लगता है , और समुद्र यूं हिलता हुआ प्रतीत होता है जैसे बड़े से थाल के ऊपर पारा रखा गया हो , और वह पारा हिल रहा हो।

विशेष

(i) शिवाजी की सेना के रणक्षेत्र के प्रस्थान को दृश्य अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन-शैली में(ii) भाषा और गुण युक्त है।

(iii) "ऐलफल हुआ है। गैल-गैल ' में नाद सौन्दर्य है। सैल उसलत हैं। में अनुप्रास अलंकार , "तारा सौ ....-- लगत तथा धरा पर --- यों हलत है। में उपमा अलंकार है।

(iv) वीर रस का सौंदर्य है।

(2) तेरे हीं भुजानि पर भूतल को भार कहिबे कौं सेषनाग दिगनाग हिमाचल है। तेरौ अवतार जग-पोषन-अरनहार, कछु करतार कौ न तो मधि अमल है। साहि-तनै सरजा समर्थ सिवराज कवि भूषन कहत जीवौ तेरो ही सफल है।

तेरौ करबाल करै म्लेच्छन कौ काल बिन काज होत काल बदनाम धरातल है।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'वीर रस के कवित नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है।कवि के अनुसार पृथ्वी का भार धारण करना और संसार का भरण-पोषण वास्तव में शिवाजी ही करते हैं। शेषनाग , दिग्गज आदि और ईश्वर का तो केवल नाम ही नाम है।

व्याख्या- कवि भूषण कहते हैं-हे शाह पुत्र सरजा शिवाजी इस संसार का भार वास्तव में आप ही उठाए हुए हैं। शेषनाग , दिग्गज (दिशाओं के हाथी) तथा हिमालय आदि पर्वत तो कहने के लिए 'भूधर' हैं। हे शिवाजी ! तुम्हारा अवतार (जन्म) ही सारे जगत की सुरक्षा और पालन-पोषण के लिए हुआ है। इस काम में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है। हे सर्वसमर्थ शिवाजी महाराज! सच कहें तो आज के राजाओं में आपका ही जीना सार्थक है। हे शिवाजी ! तुम्हारी तलवार ही अत्याचारी मुगलों का अंत करने वाली है। बेचारा काल तो जान लेने के लिए व्यर्थ ही बदनाम चला आ रहा है।

विशेष

(1) कवि ने शिवाजी महाराज को एक कर्तव्यनिष्ठ शासक सिद्ध किया है।

(ii) परिष्कृत, ओजपूर्ण और साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(ii) शैली ओजगुण और वीररस सेपरिपूर्ण है।

(iv) "साहि-तनै सरजा , समथ्य सिवराज में अनुप्रास अलंकार है।

(v) शिवाजी के शौर्य और कर्तव्यनिष्ठा का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

(3) गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर , दावा नागजूह पर सिंह सिरताज को।

दावा पुरहूत को पहारन के कूल पर, दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।

भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में , तम पर दावा रविकिरनसमाज को।

पूरब, पछाँह देस, दच्छिन ते उत्तर लौं जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'वीर रस के कवित नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है। छंद में कवि ने अपने आश्रयदाता और काव्य-नायक महाराजा शिवाजी के प्रताप और दबदबे का उदाहरण सहित वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि भूषण कहते हैं कि जिस प्रकार सर्पो के परम शत्रु गरुड़ का प्रभुत्व सर्पोपर है। शेरों का प्रभुत्व हाथियों के झुंड पर है। इंद्रदेव का संपूर्ण पर्वतों

पर आधिपत्य है , सभी पक्षियों पर जैसे बाज का आतंक बना रहता है और नौ खंडों वाली सम्पूर्ण पृथ्वी पर जैसे सूर्य की किरणों के प्रकाश का अंधकार पर आधिपत्य है। उसी प्रकार पूर्व , पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं में जहाँ भी बादशाह औरंगजेब के अधीन शासकों का शासन है,

वहाँ पर महाराज शिवाजी का आतंक छाया रहता है।

विशेष

(i) कवि ने शिवाजी महाराज के प्रताप , शौर्य और पराक्रम का ओजपूर्ण भाषा-शैली में वर्णन किया है।

(ii) "अखंड, नवखंड, महिमंडल में" अनुप्रास अलंकार है। मालोपमा तथा उदाहरण का भी सुंदर प्रयोग है।

(iii) भाषा प्रसंगानुकूल और भावानुकूल है।

इस प्रश्न-पत्र की
आदर्श उत्तर-कुंजी आप
03:00 बजे बाद इस लिंक
https://tinyurl.com/y66j6z98
से डाउनलोड कर सकते हैं।

कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए-
https://tinyurl.com/y6tpcbsp

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg